महाराजा सयाजीराव हिंदी पत्रसंग्रह

खंड 24

भाग 1

महाराजा सयाजीराव गायकवाड का पत्रसंग्रह

Scanned by CamScanner

महाराजा सयाजीराव गायकवाड
पत्र संग्रह : भाग 1
संपादक
डॉ. एकनाथ पगार
अनुवादक
डॉ. विजय शिंदे
डॉ. अमोल पालकर

प्रथम संस्करण : 2020
प्रतियों की संख्या : 5000

प्रकाशक :
सचिव,
महाराजा सयाजीराव गायकवाड
चरित्र साधन समिति, 115, म. गांधीनगर,
औरंगाबाद – 431 005.
sayajirao.govt@gmail.com

©
सचिव,
उच्च व तंत्र शिक्षा विभाग,
महाराष्ट्र शासन, मंत्रालय,
मुंबई – 400 032.

मुखपृष्ठ : राजेश दुबे / महेश मोधे
छपाई सहायता : महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति
और पाठ्यक्रम अनुसंधान मंडल, पुणे 4.

मुद्रक : प्रिंटवेल इंटरनेशनल प्रा.लि.
जी – 12, एम. आय. डी. सी.,
चिकलठाणा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र.

Maharaja Sayajirao Gaekwad
Selected Letters : Vol. 1
Edited by
Dr. Eknath Pagar,
Original English Letters Translated
into Marathi & Hindi
For Maharaja Sayajirao Gaekwad
Source Material Publication
Commitee, Higher Education,
Govt. of Maharashtra,
Mumbai - 32

प्रस्तुत प्रकाशन का हेतु महाराजा सयाजीराव गायकवाड और उनसे संबंधित विविध विषयों के लेखन को संयुक्त रूप से प्रकाशित करना है।

Books available at :

- The Directorate of Government Printing, Stationary and Publications, Maharashtra State, Netaji Subhash Road, **Mumbai** - 400 004.
  Phone - (022) 23632693, 23630695, 23631148, 23634049.
- **Pune** : Phone - (020) 26125808, 26124759, 26128920.
- **Nagpur :** Phone - (0712) 2562615, 2562815, 2564946.
- **Aurangabad :** Phone - (0240) 2331468, 2343396, 2344653.
- **Kolhapur :** Phone - (0231) 2650402, 2650395, 2658625.

Scanned by CamScanner

महाराजा सयाजीराव गायकवाड
का
पत्रसंग्रह

भाग 1

(जनवरी 1886 से दिसंबर 1901)

अनुवादक

डॉ. विजय शिंदे

(पृष्ठ क्रमांक 1 से पत्र क्रमांक 200 और पत्र क्रमांक 555 से 612)

डॉ. अमोल पालकर

(पत्र क्रमांक 201 से 554)

प्रधान संपादक – डॉ. सुनीलकुमार लवटे

खंड संपादक – डॉ. गिरीश काशिद

Scanned by CamScanner

भगत सिंह कोश्यारी
राज्यपाल, महाराष्ट्र राज्य

सत्यमेव जयते

राज भवन
मलबार हील
मुंबई ४०० ०३५
दूरध्वनी : ०२२-२३६३ २६६०
फॅक्स : ०२२-२३६८ ०५०५

३१ जानेवारी २०२०

शुभकामना

महाराजा सयाजीराव गायकवाड ने सुशासन के आधार पर बडोदा राज्य में आमूलचूल परिवर्तन किया। उन्होंने आजादी से पूर्व बडोदा राज्य में आदर्श शासन का अवलंब किया। स्थानिक स्वराज संस्थाओं का विकेंद्रीकरण किया। राज्य के प्रमुख का हमेशा विद्वान होना चाहिए इस भूमिका का पालन करते समय स्वंय परिश्रम से कर्मठता का पालन करते हुए प्रज्ञावंत बने। अपनी पूरी जिंदगी में उन्होंने ज्ञान की उपासना को जारी रखा और उसका उपयोग जनकल्याण के लिए किया।

आज दुनियाभर में सूक्ष्म नियोजन करने की बात पर जोर दिया जाता है। महाराजा सयाजीराव ने सौ-डेढ़ सौ साल पहले इस प्रकार के नियोजन पर जोर दिया था। उसके लिए कई प्रकार के जनकल्याणकारी कानूनों का निर्माण किया। इसलिए कुछ ही दिनों में राज्य विकसित होकर संपन्न बन गया। नियोजन और गैरजरूरी खर्चों में कटौती के कारण बडोदा राज्य आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना। इस संपन्नता और आत्मनिर्भरता के बलबूते पर जनता के लिए कल्याणकारी कार्य किए गए।

महाराजा सयाजीराव गायकवाड का महान कार्य सभी के लिए प्रेरक है। 'महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र साधन प्रकाशन समिति' महाराजा सयाजीराव के जीवन कार्य को जनसाधारण के सामने लाने के लिए प्रयासरत है, यह अत्यंत संतोषजनक बात है। मैं प्रकाशन समिति और उससे जुड़े लेखकों का हार्दिक अभिनंदन करता हूं और सभी खंडों के प्रकाशन हेतु शुभकामना देता हूं।

(भगत सिंह कोश्यारी)

Scanned by CamScanner

उद्धव बाळासाहेब ठाकरे
मुख्य मंत्री
महाराष्ट्र

सत्यमेव जयते

मंत्रालय
मुंबई ४०० ०३२

२२ जानेवारी २०२०

शुभकामना

आजादी से पहले शिक्षा ही परिवर्तन का साधन था। इसी सूत्र को महाराजा सयाजीराव गायकवाड ने अपने चौसठ साल के सुशासन में अवलंबित किया था। महाराजा सयाजीराव गायकवाड सर्वधर्म समभाव और ज्ञान पर आधारित प्रबोधनात्मक मार्गों का अवलंब करनेवाले महाराष्ट्र के महान सुपुत्र है। उनकी यह वैचारिक संपत्ति लिखित रूप में उपलब्ध हो इसलिए राज्य शासन की ओर से महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र साधन सामग्री समिति कार्य कर रही है।

महाराजा सयाजीराव ने शिक्षा की सहायता से सुप्रशासन, सामाजिक सुधार, न्याय प्रक्रिया, साहित्य और विविध कलाओं को सुरक्षित करने और बढ़ावा देने का कार्य किया है। अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, खेती में सुधार, जलसिंचन, अकाल निवारण और बाढ़ से पीड़ित प्रदेशों में विविध समस्याओं के साथ मुकाबला करना, सहकार क्षेत्र की नीतियां तय कराना आदि विविध विषयों में महाराजा सयाजीराव ने एक आदर्श की स्थापना की है। ग्रामपंचायतों की व्यवस्था के माध्यम से प्रजातंत्र को बूनियादी रूप से पक्का करने की दूरदर्शिता महाराजा के पास थी। स्वतंत्रता युद्ध के समर्थक सयाजीराव गायकवाड ने प्रगतिशील स्वतंत्रता सेनानियों को, युगपर्वतकों और जरूरतमंद प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को बड़ी दर्यादिली के साथ छात्रवृत्तियां दी। इसी कृति और कार्य के चलते वे दूरदर्शी और अनेक आंदोलनों के संरक्षक बन गए थे।

महाराजा सयाजीराव के विचार आज भी मार्गदर्शक है। इसी प्रकार से महाराजा की विचार स्वरूप मौजूद संपूर्ण संपत्ति भविष्य में कई पीढ़ियों को मार्गदर्शन करती रहेगी। उनके द्वारा लिखित सभी प्रकार का साहित्य हमारे लिए बहुत बड़ी सांस्कृतिक देन है। यह सांस्कृतिक देन ग्रंथों के आकार में विविध खंडों में प्रकाशित करने की योजना हेतु समिति का अभिनंदन और भविष्यकालीन योजनाओं हेतु शुभकामनाएं।

उद्धव ठाकरे

(उद्धव बाळासाहेब ठाकरे)

दूरध्वनी : ०२२-२२०२ ५१५१/२२०२ ५२२२, **फॅक्स :** ०२२-२२०२ ९२१४
ई-मेल : cm@maharashtra.gov.in, **वेब साईट :** www.maharashtra.gov.in

Scanned by CamScanner

महाराजा सयाजीराव गायकवाड
चरित्र साधन प्रकाशन समिति

1.	मा. उदय सामंत मंत्री, उच्च व तंत्र शिक्षा	--	अध्यक्ष
2.	मा. प्राजक्त तनपुरे राज्यमंत्री, उच्च व तंत्र शिक्षा	--	उपाध्यक्ष
3.	मा. सौरभ विजय सचिव, उच्च व तंत्र शिक्षा	--	सदस्य
4.	डॉ. धनराज माने संचालक, उच्च शिक्षा	--	निमंत्रक
5.	संचालक, शासन मुद्रण, लेखन सामग्री प्रकाशन, मुंबई	--	सदस्य
6.	डॉ. रमेश वरखेडे, नाशिक	--	अशासकीय सदस्य
7.	श्रीमती मंदाताई हिंगुराव, बडोदा	--	अशासकीय सदस्या
8.	डॉ. अशोक राणा, अमरावती	--	अशासकीय सदस्य
9.	डॉ. एकनाथ पगार, नाशिक	--	अशासकीय सदस्य
10.	श्री. बाबा भांड, औरंगाबाद	--	सदस्य सचिव

Scanned by CamScanner

महाराजा सयाजीराव गायकवाड ने जिन विविध व्यक्तियों को पत्र लिखे हैं उन पत्रों के क्रमांक और विषय

भाग पहला

1. बारखली।
2. पुणे की संस्था को अनुदान।
3. द्वारका में धर्मादाय संस्था।
4. जल्दी लाभ के लिए खोखली उपाधियां ना हो।
5. अच्छे पुत्र की प्राप्ति।
6. कर्नल रॉस के आने तक बर्कले।
7. सरनोबत वेतनवृद्धि।
8. आनंदराव के लिए सेवानिवृत्ति वेतन।
9. बोट के प्रवीण नाविक।
10. रेल से बोट अच्छी है।
11. महत्त्वपूर्ण विषयों में मध्यस्थता ना हो।
12. राज्याभिषेक और रानी का जन्मदिवस।
13. मानवहितार्थ संस्था को प्रोत्साहन।
14. म्युजियम को दान।
15. विद्वतजनों के साथ गणपतराव।
16. सेवानिवृत्ति वेतन और बोनस।
17. सर्वेक्षणकर्मियों को प्रोत्साहन।
18. महत्त्वपूर्ण कामों को अनुमति।
19. इलियट सर का अमरेली निवास।
20. प्रिंस ऑफ वेल्स को दान।
21. लॉर्ड डफरीन की बडोदा भेंट।
22. कृषि विद्यालय की स्थापना।
23. लेडी रे से मुलाकात।
24. ज्यादा राशि की जांच-पड़ताल।
25. पत्र संवाद को खंड़ित ना करें।
26. अस्पताल का नामकरण लेडी डफरीन के नाम से।
27. अमरेली भेंट।
28. समुद्र मार्ग से कोलोंबो।
29. समुद्र मार्ग से काठियावाड़।
30. समुद्री यात्रा के अनुभव।
31. गीर मुकदमें के लिए कर्नल लेस्टर।
32. जे. वॉटसन के साथ तालमेल।
33. नीलगिरि महाबलेश्वर।
34. भतीजे को खुशहाली।
35. श्रीलंका भेंट।
36. कोलोंबो।
37. छोटे भाई को खुशहाली।
38. श्वसूर को पत्र।
39. डफरीन का इस देश को छोड़कर जाना।
40. उटकमंड उटी।
41. संयम।
42. इलियट सर को बढ़ोतरी।

Scanned by CamScanner

596. विलंब से और पुरानी पद्धति की शस्त्रक्रिया के कारण रानीसाहिब के स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ।
597. देवास के महाराजा के आगमन की सूचना।
598. बेबस होकर कर्जे को मंजूरी।
599. सूखे की वार्ता।
600. काठियावाड़ अहमदाबाद अकाल से पीड़ित।
601. छुट्टी में बडोदा आने का निमंत्रण।
602. सूखे से फसल नष्ट होना।
603. धार निवासी उधोजीराव के पत्र का उत्तर।
604. कर्नल मीड के भाई ने भेजी पुस्तक के लिए आभार।
605. दशहरा की शुभकामनाओं का आदान-प्रदान।
606. लगातार अकाल की परिस्थितियां।
607. कर्नल मीड के भाई के पत्र का उत्तर।
608. उपरोक्त पत्र के साथ सहपत्र।
609. सूखे के दो साल।
610. बेनब्रिज के भतीजे का पुणे में स्वागत।
611. सूखे के कारण चिंता।
612. विदेश में शिक्षा पाने हेतु।

Scanned by CamScanner

आधुनिक भारत के लोककल्याणकारी प्रतिभासंपन्न महाराजा सयाजीराव गायकवाड जी के चुनिंदा पत्रों के संग्रह को तीन खंडों में प्रकाशित किया गया है। 1875 से 1939 के चौंसठ वर्षों के लंबे कार्यकाल में महाराजा का विविध विषयों से संबंधित चिंतन इन पत्रों से प्रकट हो रहा है। महाराजा ने बडोदा रियासत में आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था के नाते अनेक प्रयोग किए हैं। धार्मिक-सामाजिक सुधार और जाति उन्मूलन के कानून बनाकर समतामूलक सामाजिक नींव रखी है। उनके द्वारा शिक्षा, खेती, ग्राम सुधार, औद्योगिकीकरण, मानव संसाधन के निर्माण हेतु कई प्रयोग किए हैं। छब्बीस बार दुनिया की यात्रा करके देश और दुनिया की कला, संस्कृति, शिक्षा पद्धति, राज्य व्यवहारनीति का अध्ययन किया है। ज्ञान संपन्न, काबिल और देश के प्रति गर्व महसूस करनेवाले लोकसेवकों का सहयोग पाया है।

इन पत्रों का मतलब 'राजाज्ञा' नहीं है। उसके लिए 'हुजूर हुकूम' यह एक स्वतंत्र लेखन प्रकार महाराजा ने प्रचलित किया था। ये पत्र उनसे भिन्न हैं। अगर इन पत्रों को कुछ कहा जाए तो वह एक राजा के स्वगत कथन हैं, एक प्रतिभासंपन्न व्यक्ति का आत्मचिंतन हैं और उससे भी ज्यादा मनुष्य के साथ बड़ी आत्मीयता के साथ संवाद स्थापित करनेवाले सुकोमल हृदय की सूक्तियां हैं। राजगद्दी से प्राप्त विरासत में मिल चुकी जिम्मेदारियों का एहसास, अज्ञानी समाज को शिक्षित, सुधारवादी और कार्यशील बनाने का जुनून कई पत्रों में अभिव्यक्त होता है। कार्यमग्न और सफल राजा की अनुभव गाथा के नाते इन पत्रों का ऐतिहासिक मूल्य निर्विवाद रूप से है। अपने राष्ट्राभिमान और स्वतंत्रता की आकांक्षा के साथ किसी भी प्रकार से समझौता किए बिना तत्कालीन ब्रिटिश राजसत्ता के साथ राजनीतिक संबंध रखते समय अनेक मुश्किल घड़ियों का सामना करना पड़ा, मानसिक तनाव की परिस्थितियां निर्माण हो गई, राजहित के लिए जहां जरूरत पड़ी वहां पर समझौते भी किए, सब्र रखते हुए जिम्मेदार भूमिका भी निभाई आदि कई घटना-प्रसंगों के साथ कई घुमावों और मोड़ों से संपन्न जिंदगी का दर्शन इन पत्रों से होता है।

सत्यमेव जयते

महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र साधने प्रकाशन समिती
उच्च शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

मूल्य ₹ 120/-

Scanned by CamScanner